Prantik Gabeshana Patrika ISSN 2583-6706 (Online)
Multidisciplinary-Multilingual- Peer Reviewed-Bi-Annual
Digital Research Journal
Website : santiniketansahityapath.org.in
Volume-3 Issue-2 January 2025

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' में लोकपरम्पराएँ
(विशेष संदर्भ रामजन्म व विवाह-संस्कार)

यशवंत सिंह

Link : https://santiniketansahityapath.org.in/wp-content/uploads/2025/02/4_Yashbant-Singh.pdf

विषय प्रवर्तन : 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड के प्रथम सोपान में गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामकथा के स्रोतों एवं रामचरित के लेखन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखा है –

''नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा –
भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति।।''[1]

अर्थात् 'अनेक पुराण, वेद व शास्त्र से सम्मत तथा श्री वाल्मीकि जी की रामायण में वर्णित और कुछ अन्यत्र से भी उपलब्ध श्री रघुनाथ जी की कथा को तुलसीदास अपने अन्तःकरण के सुख के लिए अत्यन्त मनोहर भाषा- रचना में विस्तृत करता है।' यहाँ पर अनेक पुराण, वेद व शास्त्र सम्मत रामकथा के मुख्य स्रोत वाल्मीकि कृत 'रामायण' के उल्लेख के साथ ही कुछ अन्यत्र स्रोतों से उपलब्ध रामकथा का भी संकेत किया गया है, जो निश्चय ही लोक यानि जनसामान्य के मध्य मौखिक परम्परा में प्रचलित रामकथा सूत्रों की ओर संकेत करता है। स्वान्तः सुखाय रघुनाथगाथा का उल्लेख भी लोक यानि जनसामान्य की प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। अपने काव्य को सुरसरि गंगा के समान सब के लिए कल्याणकारी मानने वाले तुलसीदास जी निश्चय ही लोकजीवन के कवि हैं; उनका काव्य शास्त्रों के साथ ही लोकपरम्पराओं, रीतिरिवाजों, लोकविश्वासों एवं लोकसंस्कारों की जीवंत छटा को अभिव्यक्त करता है।

बीज शब्द : रामकथा, लोकपरंपरा, रामचरितमानस, निपुत्री राजा, पुत्र- जन्म, जन्म-संस्कार, विवाह-संस्कार, अवधपुरी, जनकपुरी, बारात प्रस्थान, शुभदायक शकुन, शंकर-पार्वती, भाँवरें, पाहुना, कोहबर, गाली-गायन, विदाई इत्यादि ।

विषय विवेचन : लोक यानि जनसामान्य मौखिक परम्परा के प्रवाह में अपना जीवन-यापन करता है, उनके जीवन में जो रीतिरिवाज परम्परा से चले आ रहे हैं, वे लोकपरम्परा कहलाते हैं। इनमें निरन्तरता का भाव सन्निहित रहता है, जो लोकजीवन को सहूलियत प्रदान करते हैं तथा लोक यानि जनसामान्य के परस्पर सम्बन्धों को एकरूपता प्रदान करते हैं, उनमें परस्पर सहयोग तथा शिष्टता का भाव जाग्रत करते हैं। लोकविश्वास जनसामान्य की वे दृढ़ आस्थाएँ हैं, जिन्हें वह विश्वास के सहारे अपने जीवन में धारण करता है। सभी के कल्याण का भाव इनमें निहित होता है तथा इनको धारण करने से अमंगल से रक्षा होती है। जबकि संस्कार हमें संस्कृति का पाठ सिखलाते हैं, मनुष्य जन्मनाः पशुवत होता है लेकिन संस्कारों के द्वारा उसे मनुष्यता के गुणों से विभूषित किया जाता है। भारतीय शास्त्रों में परम्परा से सोलह संस्कारों का उल्लेख मिलता है, जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्य-जीवन में घटित होते रहते हैं। इन संस्कारों की व्याप्ति लोक यानि जनसामान्य के जीवन में सर्वत्र विद्यमान मिलती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में राजा दशरथ के परिवार की जो छवि चित्रित की हैं वह लोकपरम्पराओं के सर्वथा अनुकूल है। वहाँ पर राजा दशरथ व रानी

कौशिल्या आदर्श माता-पिता हैं; राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघन आदर्श पुत्र हैं; भरत, लक्ष्मण व शत्रुघन आदर्श भ्राता है; सीता, माण्डवी, उर्मिला व श्रुतिकीर्ति आदर्श पुत्रबधुएँ हैं। इसी कारण राजा दशरथ की गृहस्थी लोक यानि जनसामन्य की आदर्श गृहस्थी है, जो रामचरितमानस को लोकपरम्पराओं से सम्पृक्त करता है। रामचरितमानस में रामादि भाईयों के जन्म के समय विविध लोकपरम्पराओं का उल्लेख मिलता है। जनसामान्य के जीवन यानि लोकजीवन में निपूते व्यक्ति को अशुभ माना जाता है, सुबह-सुबह कोई उसका मुँह तक नहीं देखना चाहता। लोगों का ऐसा विश्वास है कि अगर कोई सुबह-सुबह निपूते व्यक्ति का मुँह देख ले तो उसे दिन-भर भोजन नसीब नहीं होता। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में वर्णित किया है –

"एक बार भूपति मन माहीं।
भै गलानि मोरें सुत नाहीं।।"[2]

एक बार अवधपुरी में रघुकुल शिरोमणि राजा दशरथ के मन में भी बड़ी ग्लानि हुई कि मेरे कोई पुत्र नहीं है। राजा तुरंत ही अपने गुरु वशिष्ठ के आश्रम में गये और उनके चरणों में प्रणाम करके पुत्र-प्राप्ति के लिए बहुत-ही अनुनय-विनय की। वशिष्ठ जी ने श्रंगी ऋषि को बुलाकर उनसे शुभ पुत्र कामेष्टि यज्ञ करवाया, जिससे अग्निदेव हविष्यान्न खीर लिए प्रकट हुए। राजा दशरथ ने उस खीर को लेकर अपनी तीनों रानियों में बाट दिया, जिसको खाने से तीनों रानियाँ गर्भवती हुईं, सब लोकों में सुख और सम्पत्ति छा गयी –

"एहि बिधि गर्भसहित सब नारी।
भईं हृदयँ हरषित सुख भारी।।
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए।
सकल लोक सुख संपति छाए।।"[3]

इसी तरह लोकपरम्परा में प्रचलित "निपुत्री राजा"[4] की कथा में साधु द्वारा दिये गये अभिमंत्रित आम के फल खाने से रानी गर्भवती होती है। अतः किसी खाद्य पदार्थ विशेष को खाने से स्त्रियों द्वारा गर्भधारण करने का वर्णन लोक की प्रवृत्ति के अनुकूल है। पवित्र चैत्र मास की नवमी तिथि को दोपहर के समय बालक राम का जन्म हुआ। पुत्र-रुदन को सुनकर छोटी रानियाँ उतावली होकर दौड़ी चली आयीं। पुत्र-जन्म के समाचार को सुनकर राजा दशरथ को ब्रह्मानंद के समान आनंद की अनुभूति हुई। अवधपुर की स्त्रियाँ झुण्ड-की-झुण्ड मिलकर रनिवास की ओर चल पड़ी, स्वाभाविक श्रंगार किये ही वे सब उठ दौड़ीं। सोने का कलश लेकर और थालों में मंगल द्रब्य भरकर गाती हुईं उन्होंने राजमहल में प्रवेश किया –

"बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं ।
सहज सिंगार किएँ उठि धाईं ।।
कनक कलस मंगल भरि थारा ।
गावत पैठहिं भूप दुआरा ।।"[5]

लोकपरम्परा में प्रचलित इस अवसर का एक अवधी 'सोहर-गीत' दृश्टब्य है –

"चैत रामनवमी श्री रामजी के जन्म भये,
धगरिन त नेग माँगे नार कै छिनौनी,
कौसल्या रानी क हार माँगै राम नहवौनी।
नाउनि नेग माँगै बुकवा कै मिजौनी,
कैकयी रानी कै हार माँगै चौक पुरौनी।।"[6]

'रामचरितमानस' में वर्णित है कि राजा दशरथ ने पुत्र-जन्म की खुशी में सभी को भरपूर दान दिया, कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटा, जो जिस प्रकार आया और जिसके मन को जो अच्छा लगा, राजा ने उसे वही दिया। हाथी, रथ, घोड़े, गौएँ, सोना, हीरे और रानियों के भाँति-भाँति के वस्त्र-गहनें राजा दशरथ ने लुटा दिये। इस अवसर पर तुलसीदास जी ने अवधपुरी के घर-घर में मंगलमय बधावा-बजने तथा नगर के सब नर-नारियों के

हर्षित होने का वर्णन किया है –

"गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद।।"[7]

लोकपरम्परा में प्रचलित इस अवसर का एक बुंदेली 'बधावा गीत' द्रश्टब्य है –

"जन्में राम अवध चलो सजनी,
राजा दशरथ ने हथिया लुटाये,
बचो इक हथिया ऐरावत वन में।
रानी कौसिल्या ने साड़ी लुटाई,
बची एक साड़ी कौसिल्या जी के तन में।।"[8]

अवधपुरी में राजा दशरथ ने इस समय गुरु वशिष्ठ को बुलवाकर पुत्र राम का जातकरम संस्कार सम्पन्न करवाया –

"नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हारक धेनु बसन मनि नृप विप्रन्ह कहँ दीन्ह।।"[9]

राजा दशरथ ने नांदीमुख श्राद्ध करके सब जातकर्म संस्कार आदि सम्पन्न किये और ब्राह्मणों को सोना, गायें, वस्त्र व मणियों का दान दिया। इसी तरह कैकेयी और सुमित्रा-इन दोनों रानियों ने भी सुंदर पुत्रों को जन्म दिया। खुशी के इस माहौल में अवधपुरी के नर-नारी इस प्रकार निमग्न हो गये हैं कि उन्हें दिन व रात का पता-ही नहीं चलता। हर्षयुक्त कुछ दिन बीतने के उपरान्त अपने चारों-पुत्रों के नामकरण संस्कार का अवसर जानकर राजा दशरथ ने मुनि ग्यानी वशिष्ठ जी को पुनः बुलवाया –

"कुछक दिवस बीते एहि भाँती।
जात न जानिअ दिन अरु राती।।
नामकरन कर अवसरु जानी।
भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी।।"[10]

मुनि वशिष्ठ ने पूजा-अनुष्ठान करके राजा दशरथ के चारों पुत्रों के नाम-राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन रखे। अब चार-पुत्रों के जन्म लेने के बाद उनकी बाल-लीलाओं से राजा दशरथ का घर-आंगन किलकारियों से गूंज उठा। तीनों रानियों सहित राजा दशरथ खुशियों से साराबोर हो गये। उन पर निपूते राजा होने का कलंक मिट गया। लोकपरम्परा में यह खुशी गीतों के माध्यम से प्रकट होती है। गढ़वाल में नामकरण संस्कार एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर विधि-विधानपूर्वक हवन-पूजन किया जाता है तथा नाच-गाने का आयोजन होता है, 'मंगल गीत' गाये जाते हैं –

"तू होलो बेटा देवता को जायो,
तू होलो बेटा कुल को उजालो,
आज जाया तेरो नाऊँ धरयाले,
तू जाया कुल को रखी नाऊँ।"[11]

अर्थात् 'हे पुत्र! तुम देवता की कृपा से पैदा हुए हो। तुम कुल को उज्ज्वल करोगे। आज तुम्हारा नामकरण हुआ है। तुम कुलदीपक बनकर कुल का यश रखना।' लोक में पुत्र को कुलदीपक कहा जाता है, क्यों कि उसी से आगे कुल का नाम चलाता है। फिर राजा दशरथ के यहाँ तो एक साथ चार-चार कुलदीपक पैदा हुए हैं, अतः उनकी खुशी का कोई पारावार नहीं है।

'श्रीरामचरितमानस' में तुलसीदास जी ने जनकपुर में रामादि भाईयों के विवाह का सुंदर वर्णन किया है, जिसमें लोकजीवन व लोकपरम्पराओं की जीवंत अभिव्यक्ति हुई है। शिव-धनुष तोड़ने की प्रतिज्ञा पूरी हो जाने के उपरान्त राजा जनक ने राम-सीता के विवाह की तैयारियाँ शुरू कीं, विवाह के लिए मण्ड़प तैयार करने हेतु कुशल व चतुर कारीगरों को बुलवाया। उन्होंने ब्रह्मा जी की वंदना करके सर्वप्रथम सोने के केले के खम्भे बनाये,

फिरहरी-हरी मणियों के पत्ते और फल बनाये, माणिक के सुंदर फूल बनाये, हरी-हरी मणियों के सीधे और गाँठों से युक्त ऐसे बाँस बनाये जो पहचाने नहीं जाते। उन्होंने सोने की सुंदर पान की लता बनायी, उसमें पच्चीकारी करके बाँधने की रस्सी बनायी तथा बीच-बीच में मोतियों की सुंदर झालरें लगा दी। माणिक, पन्ने, हीरे व फिरोजी रंग के कमल बनाये; भौंरे और बहुत-से रंगों के पक्षी बनाये जो हवा चलने पर गूँजते और कूजते हैं। खम्भों पर मंगलमय द्रब्य लिए देवताओं की मूर्तियाँ गढ़कर निकाली तथा गजमुक्ताओं के सहज-ही सुहावने, अनेक तरह के चौक पुरवाये। नीलमणि को कोरकर अत्यन्त सुंदर आम के पत्ते बनाये, सोने के बौर और रेशमी डोरी से बँधे पन्ने के बने हुए फलों के गुच्छों को सुशोभित किया। उन्होंने कामदेव के फंदे के समान सुंदर व उत्तम बंदनवार बनाये तथा अनेक मंगल-कलश, सुंदर ध्वजा-पताका, परदे व चँवर बनाये, जिसमें मणियों के अनेक सुंदर दीपक शोभायमान हैं। इस विचित्र मण्डप में श्रीजानकी जी दुलहिन होंगी तथा श्रीराम जी दूल्हा के रूप में उपस्थित होंगे, जिसकी अलौकिक शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता –

"जेहिं मण्डप दुलहिनि बैदेही।
सो बरनै असि मति कबि केही।।
दूलह रामु रूप गुन सागर।
सो बितानु तिहूँ लोक उजागर।।"[12]

लोकपरम्परा में प्रचलित इसी आशय का एक बुंदेली 'विवाह गीत' दृश्टब्य है –

"हरे बाँस मण्डप छाये, सिया जूँ को राम ब्याहन आये।
जब सिया जूँ की लिखत लगुनिया, रकम-रकम कागज
आये, सिया जूँ को राम ब्याहन आये।
जब सिया जूँ के होत है टीका, ऐरापत हाथी आये।
जब सिया जूँ के चढ़त चढ़ाये, भाँति भाँति गहने आये।
जब सिया जूँ की परत भाँवरे ब्रह्मा पंडित बन आये।
जब सिया जूँ की होत बिदा है, सब सखियन आँसू
आये, सिया जूँ को ब्याहन राम आये।
हरे बाँस मण्डप छाये, सिया जूँ को ब्याहन राम आये।।"[13]

उधर अवधपुरी में जब राजा जनक जी द्वारा प्रेषित राम-विवाह की पत्रिका पहुँची तो राजा दशरथ खुशी से फूले नहीं समाये, अवधपुरी में राम की बरात सजने लगी। लोगों ने अपने-अपने घरों को सजाकर मंगलमय बना दिया। गलियों को चतुरसम (चंदन, केशर, कस्तूरी व कपूर) से सींचा और घर के द्वारों पर सुंदर चौक पुराये। बिजली कीसी कांतिवाली चंद्रमुखी, हरिन के बच्चे के- से नेत्रोंवाली और अपने सुंदर रूप से कामदेव की स्त्री रति के अभिमान को छुड़ाने वाली अवधपुरी की सुहागिन स्त्रियाँ सोलहों श्रृंगारों से सजकर जहाँ-तहाँ झुंड-की झुंड मिलकर मनोहर वाणी से मंगल-गीत गा रही हैं, जिनके कंठ के मधुर स्वर को सुनकर कोयल-पक्षी भी लजा जाती है –

"गावहिं मंगल मंजुल बानीं।
सुनि कल रव कलकंठि लजानीं।।"[14]

अवधपुरी में कहीं नगाड़े बज रहे हैं, भाट विरुदावली का गायन कर रहे हैं, ब्राह्मण लोग वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं। वहीं सुंदर स्त्रियाँ श्री राम व सीता जी का नाम ले-लेकर मंगलगीत गा रहीं हैं। इस अवसर पर उत्साह बहुत है, दशरथ का महल छोटा पड़ रहा है। अतः उत्साह मानों चहुओर उमड़ चला है –

"गावहिं सुंदरि मंगल गीता।
लै लै नामु रामु अरु सीता।।
बहुत उछाह भवनु अति थोरा।
मानँ हु उमगि चला चहु ओरा।"[15]

अवधपुरी से श्रीराम जी की बरात-प्रस्थान के समय सुंदर राजकुमार मृदंग और नगाड़े की ध्वनि के साथ अपने घोड़ों को नचा रहे हैं। चारों ओर शोर मचा है, घोड़े और हाथी गरज रहे हैं, स्त्रियाँ मंगलगान कर रहीं हैं, रसीले रागयुक्त शहनाइयाँ बज रहीं हैं, पट्टेबाज कसरत के खेल कर रहे हैं, हँसी करने में निपुण और हास्य गानों में चतुर विदूषक तरह-तरह के तमाशे कर रहे हैं। इस अवसर पर तुलसीदास जी ने शुभदायक शकुन होने का वर्णन किया हैं –

"बनइ न बरनत बनी बराता। होहिं सगुन सुंदर सुभदाता।।
चारा चाषु बाम दिसि लेई। मनहुँ सकल मंगल कहि देई।।
दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरसु सब काहूँ पावा।।
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघट सबाल आव बर नारी।।"[16]

अर्थात् नीलकंठ पक्षी बायीं ओर चारा लेकर मानो सम्पूर्ण मंगल की सूचना दे रहा है, दाहिनी ओर कौआ खेत में शोभा पा रहा है, नेवले का दर्शन भी सब बरातियों ने पाया। इस समय तीनों प्रकार की-शीतल, मंद, सुगन्धित हवा अनुकूल दिशा में चल रही है तथा सुहागिन स्त्रियाँ भरे हुए घड़े व गोद में बालक लिए आ रहीं हैं।

जनकपुरी में राम-बरात के पहुँचते ही उनकी अगवानी व स्वागत-सत्कार हुआ, सभी बरातियों को ठहरने के लिए सब प्रकार से सुलभ स्थान दिये गये। कोयल के समान मधुरभाषी जनकपुर की स्त्रियाँ आपस में बातचीत करतीं है कि हे सुंदर नेत्रों वाली! इस विवाह में हमारा बड़ा लाभ है, क्यों कि राम व लक्ष्मण दोनों भाई हमारे नेत्रों के अतिथि हुआ करेंगे। इस अवसर के एक बुंदेली विवाह-गीत में दुल्हा-दुल्हन बने भगवान राम व सीता-जानकी की मनोहर छवि का वर्णन मिलता है –

"बने दूल्हा छबि देखो भगवान की दुल्हन बनीं सिया जानकी,
जैसेही दूल्हा अवधबिहारी, तैसेही दुल्हन जनक दुलारी,
जाऊँ तन-मन पे बलिहारी।
मंशा पूरन भई सबके अरमान की दुल्हन बनीं सिया जानकी।
ठाड़े राजा जनक के द्वार, संग में चारौ राजकुमार,
दर्शन करते सब नर-नार।
धूम छाई है डंका निशान की दुल्हन बनीं सिया जानकी।
सखियाँ फूलों नहीं समावैं, दशरथ जूँ को गारी गावैं,
दशरथ खड़े-खड़े मुसकावैं।
गारी गातीं हैं गीता औ ज्ञान की दुल्हन बनीं सिया जानकी।
सिर पै मौर-मुकुट को धारैं, बाघो बारम्बार सम्हारैं,
हो रहीं फूलन की बौछारौं।
शोभा बरनी न जाय धनुष बाण की, दुल्हन बनीं सिया जानकी।
कहैं जनक दोई हाथ कर जोर, सुनियो-सुनियो अवध किशोर,
किरपा करियो हमारी ओर।
मोपै खातिर न सधहै जलपान की, दुल्हन बनीं सिया जानकी।
बने दूल्हा छबि देखो भगवान की दुल्हन बनीं सिया जानकी।"[17]

अब जनकपुर में मंगलों का मूल लग्न का दिन आ गया। हेमन्त ऋतु का सुहावना अगहन का महीना था। राजा जनक ने अपने पुरोहित शतानंद को बुलाकर राम व सीता का विवाह सम्पन्न कराने को कहा। राम-बरात को द्वारचार के लिए आती जानकर बहुत प्रकार से बाजे-बजने लगे और राजा जनक की पत्नी सुनयना जी सुहागन स्त्रियों को बुलाकर 'परिछन' की तैयारी करने लगीं –

"साजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनी बर नारि।।"[18]

श्री राम जी को वर-वेष में देखकर सीता जी की माता सुनयना जी के मन में

अशीम सुख हुआ। मंगल अवसर को जानकर अपने नेत्रों में खुशी के जल को रोके हुए रानी सुननया जी ने प्रसन्न मन से श्रीराम जी का परछन किया। उन्होंने दूल्हा राम जी की आरती करके अर्ध्य दिया, तत्पश्चात वर राम जी ने शादी के मण्डप की ओर गमन किया। इस अवसर पर नाई, बारी, भाट और नट आदि प्रजाजन दूल्हा राम जी की निछावर पाकर हृदय से आनदित होकर, अपने-अपने सिर नवाकर आशीष देते हैं, उनके हृदय में हर्ष समाता नहीं है।

भारतीय लोकपरम्परा में शंकर जी व पार्वती जी के विवाह को प्रथम-विवाह माना जाता है, जिसका अनुसरण करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने राम जी व सीता जी के विवाह वर्णन में लिखा है कि शादी के मण्डप के नीचे राजा जनक के बायीं ओर बैठीं पटरानी सुननया ऐसी शोभित हो रहीं हैं मानों पार्वती जी के पिता हिमाचल के साथ माता मैना जी विराजमान हों। उन दोनों ने दूल्हा राम के चरण पखारे तथा लोक और वेद की रीति को सम्पन्न करते हुए पुत्री सीता का कन्यादान किया। जैसे हिमाचल ने शिवजी को पुत्री पार्वती और सागर ने भगवान विष्णु को लक्ष्मी जी दान कीं थीं, वैसे से पिता जनक ने श्रीराम जी को पुत्री सीता समर्पित की। अब विधिपूर्वक हवन करके दूल्हा राम व दुल्हिन सीता की गठजोड़ी की गयी और उनकी भाँवरें होने लगीं –

"हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई।।
क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेहु मूरति सावँरीं।
करि होम बिधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भावँरीं।।"[19]

लोक में भावँरों को सप्तपदी संस्कार कहा जाता है, जिसके साथ विवाह सम्पन्न मान लेते हैं तथा पुत्री परायी अर्थात् वर की हो जाती है। इस अवसर पर गढ़वाली स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला सप्तपदी-गीत' दृश्टब्य है –

"पैलो फेरो फेरी लाड़ी, कन्या च कुँवारी,
दूजो फेरो फेरी लाड़ी कन्या च माँ की दुलारी,
तीजो फेरो फेरी लाड़ी कन्या च भाइयों को लड़याली,
चौथो फेरो फेरी लाड़ी कन्या च मैत छोड़याली,
पाँचो फेरो फेरी लाड़ी सैसर की च त्यारी,
छठों फेरो फेरी लाड़ी सासु की च ब्वारी,
सातो फेरो फेरी लाड़ी, लाड़ी ह्वै चुकी तुमारी।"[20]

तुलसीदास जी ने राम-विवाह के इस प्रसंग को इस तरह वर्णित किया है – मुनियों ने आनंदपूर्वक राम व सीता की सात भाँवरें फिरायीं और नेगसहित सब रीतियों को पूर्ण किया। फिर वर श्रीराम वधू सीता जी की मांग में सिंदूर दान दे रहे हैं, यह शोभा अवर्णनीय हैं –

"प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरीं।
नेगसहित सब रीति निबेरीं।।
राम सीर सिय सेंदुर देहीं।
शोभा कहि न जाति बिधि केहीं।।"[21]

अब गुरु वशिष्ठ जी की आज्ञा से पति और पत्नी राम-सीता एक आसन पर बैठे। सीता जी बार-बार राम जी को देखतीं हैं और सकुचा जातीं हैं, पर उनका मन नहीं सकुचाता। श्रीराम जी का साँवला शरीर स्वभाव से ही सुंदर है, महावर से युक्त उनके चरण बड़े सुहावने लगते हैं। वे पवित्र और मनोहर पीली धोती धारण किये हैं, कमर में सुंदर किंकिणी और कटिसूत्र हैं, विशाल भुजाओं में रत्न जटित आभूषण सुशोभित हैं। उनके शरीर में पीला जनेऊ महान शोभा दे रहा है, हाथ की अँगूठी चित्त को चुरा लेती है, चौड़ी छाती पर सुंदर आभूषण सुशोभित हैं। पीला दुपट्टा जनेऊ की तरह शोभित है, जिस के दोनों छोरों पर मणि और मोती लगे हैं। कमल के समान उनके सुंदर नेत्र हैं, कानों में सुंदर कुंडल

पहने हैं और उनका मुख तो सारी सुंदरता का खजाना ही है। उनकी भौहें पतली और नसिका मनोहर है, ललाट पर चंदन का तिलक तो मानो सुंदरता का घर ही है। श्रीराम जी के सिर पर मनोहार मौर शोभित हो रहा है, जिसमें मंगलमय मोती और मणि गुँथे हुए हैं पर सुंदर आभूषण सुशोभित हैं। पीला दुपट्टा जनेऊ की तरह शोभित है, जिस के दोनों छोरों पर मणि और मोती लगे हैं। कमल के समान उनके सुंदर नेत्र हैं, कानों में सुंदर कुंडल पहने हैं और उनका मुख तो सारी सुंदरता का खजाना ही है। उनकी भौहें पतली और नसिका मनोहर है, ललाट पर चंदन का तिलक तो मानो सुंदरता का घर ही है। श्रीराम जी के सिर पर मनोहार मौर शोभित हो रहा है, जिसमें मंगलमय मोती और मणि गुँथे हुए हैं –

"सुंदर भृकुटि मनोहर नासा।
भाल तिलक रुचिरता निवासा।।
सोहत मौरु मनोहर माथे।
मंगलमय मुकुता मनि गाथे।।"[22]

इस अवसर का जनकपुर के पाहुने यानि दामाद श्रीराम जी के मनोहरी रूप की शोभा का वर्णन करता एक मैथिली-गीत दृश्टब्य है –

"मोही ले-लख सजनी मोरा मनवाँ पाहुनवाँ राघव,
ये हो पाहुनवाँ राघव सिया के साजनवाँ राघव
जुल्मी जुलुफिया कारी, माथे मन मौवरियाँ न्यारी,
लाले-लाले भाल पर चंदनवाँ पाहुनवाँ राधव
अखियाँ में काजर कारी, होठवा में पान के लाली,
मुस्काइत स्यामल बदनवाँ पहुनवाँ राघव।
दुपट्टा चपकन लखनौती, परिहे बियाहुती धोती,
हथवा में आम के कंगनवाँ पाहुनवाँ राघव।
धन-धन किशोरी मोरी, दिखली सनेहिया जोरी,
हिया मोरा कोहबर के भवनवा पाहुनवाँ राघव।
मोही ले-लख सजनी मोरा मनवाँ पाहुनवाँ राघव।।"[23]

जनकपुर में श्रीराम व सीता जी के विवाह की तरह ही भरत जी का माण्ड़वी के साथ, लक्ष्मण जी का उर्मिला के साथ तथा लघु भ्राता शत्रुघन का श्रुतिकीर्ति के साथ विवाह-संस्कार सम्पन्न हुए। तब जनकपुर की सुहागिन स्त्रियाँ सुख पाकर चारों कुँअर और कुमारियों को कोहबर में लायीं और अत्यन्त प्रेम से मंगल-गीत गा-गाकर लौकिक रीति सम्पन्न करने लगीं –

"कोहबरहि आने कुँअर कुअरि सुआसिनिन्हि सुख पाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै।।
लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं।
रनिवासु हास बिलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं।।"[24]

इस तरह रनिवास में हास-विलासयुक्त आनंदमयी वातावरण में श्रीराम जी सहित चारों भाईयों का विवाह-संस्कार सम्पन्न हो जाने के उपरान्त चारों कुमार बहुओं सहित पिता दशरथ के पास जनवासे आये। उस समय ऐसा मालूम होता था मानो शोभा, मंगल और आनंद से भरपूर जनवासा उमड़ पड़ा हो। इधर राजा जनक ने बहुत प्रकार की रसोई बनवाई तथ बरातियों को जेवने के लिए बुला भेजा। राजा जनक ने सभी बरातियों के चरण धोये तथा सबको यथायोग्य पीढ़ों पर बैठाया। सबके सामने आदर के साथ पत्तलें पड़ने लगीं, चतुर और विनीत रसोइये सुंदर, स्वादिष्ट और पवित्र दाल-भात और गाय का सुगन्धित घीक्षणभर में सबके सामने परोस गये। चतुर रसोइये विविध प्रकार के व्यंजन, जो रसों से युक्त स्वादिष्ट हैं परोस रहे हैं। बरातियों के भोजन करते समय जनकपुर की स्त्रियाँ बराती-पुरूषों और उनकी स्त्रियों के नाम ले-लेकर मधुर स्वर में गाली गा रहीं हैं –

"समय सुहावनि गारि बिराजा।

हँसत राउ सुनि सहित समाजा।।
एहि बिधि सबहीं भोजन कीन्हा।
आदर सहित आचमनु दीन्हा।।"[25]

फिर पान देकर जनक जी ने समाज सहित समधी दशरथ जी का पूजन किया। तब सब राजाओं के सिरमौर श्री दशरथ जी प्रसन्न होकर सब बरातियों के साथ जनवासे चले गये। लोकजीवन में इस अवसर पर समधी-समधिन के प्रति मजाक करने का प्रचलन मिलता है। बुंदेलखण्ड में प्रचलित एक 'गाली-गीत' में श्रीराम जी की माताओं एवं उनकी बहन के चरित्र पर व्यंग्य किया गया है –

"लागत रहे नीके लाला आय हते जा दिन से,
हमने सुनी अवध की नारी, दूर रहे पुरुसन से,
खीर खाय सुत पैदा करतीं लाला बड़े जतन से,
बहन तुमारी तुम्हें छोड़ के जाय बसी रिसियन से,
बुरो मान जिन जैयो लालइन साँची बातन से,
साँची झूठी तुम सब जानो, का कह सकत बड़न से।"[26]

जनकपुर में अब सीता जी की विदाई का समय आ गया। राजा जनक ने रनिवास में खबर भिजवाई कि अयोध्यानाथ श्री दशरथ जी विदाई चाहते हैं तो रनिवास में उदासी छा गयी। राजा जनक ने बेटियों की विदाई के समय अपरिमित दहेज दिया –

"दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह बिदेहँ बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि।"[27]

व्याकुल रानियाँ बार-बार सीता जी को गोद में लेतीं हैं और आर्शीवाद देकर सिखावन देतीं है कि तुम सदा अपने पति की प्यारी होओ, तुम्हारा सुहाग अचल हो, हमारी यही आशीष है। सीता जी की सयानी सखियाँ भी उन्हें स्त्री-धर्म की शिक्षा देती कहतीं हैं –

"सासु ससुर गुरु सेवा करेहु।
पति रुख लख आयसु अनुसरेहु।।
अति सनेह बस सखीं सयानी।
नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी।।"[28]

इस आशय का बुंदेलखण्ड में प्रचलित एक 'विदाई-गीत' दृश्टब्य है –

"जइयो ललीतुम फलियो फूलियो सदा सुहागन रहियो मोरीलाल,
एक बात बेटी तुमसे कहत है, जित घर कूँ तुम जइयो मोरी लाल,
सास-ससुर की बेटी सेवा करियो, पति की तो पूजा-करियो मोरी लाल।
जेठ-जेठानी को करियो कायदा, ननदी से कोमल रहियो-मोरी लाल,
देवर-देवरानी से मिलकर रहियो, सबई खौ प्यारी-रहियो मोरी लाल।
पैदा करके बे जिन्तौं लै आवैं, उत्तेई से गुजर चलइयो मोरी लाल,
जइयो लली तुम फलियो फूलियो सदा सुहागन रहियो मोरी लाल।।"[29]

तुलसीदास जी ने सीता जी की विदाई के समय राजा जनक द्वारा भी स्त्री-धर्म एवं कुल-रीति की शिक्षा देने का वर्णन किया है –

"बहुबिधि भूप सुता समुझाई।
नारिधरमु कुलरीति सिखाई।।"[30]

पुत्री सीता की विदाई के अवसर पर परम ज्ञानी व वैराग्यवान विदेह जनक भी अपना धीरज खो बैठते हैं। वे राजा दशरथ से विनती करते हुए कहते हैं – कन्या का पिता तो केवल यही कह सकता है कि इन चारों बेटियों को अपनी परिचायिकाएँ समझिये, जिन्हें मैं आपके चरणों में सौप रहा हूँ।' इस पर राजा दशरथ कहते हैं कि नहीं महाराज! मै तो इन्हें अयोध्या की रानीं समझकर ले जा रहा हूँ। ये तो मेरे घर की लक्ष्मी हैं और लक्ष्मी का स्थान सदैव सिर पर ही होता है, चरणों में कदापि नहीं। लोकपरम्परा में पाहुने राम की

मोहक छबि आज भी जनकपुर व मिथिलाचंल में मौजूद है। आज भी जनकपुर के जनसामान्य में अयोध्यावासियों के प्रति श्रद्धा की वही भाव-भूमि देखने को मिलती है। पाहुने या दामाद को जितना मान-सम्मान मिथिलाचंल में मिलता है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। इसलिए लोक में एक कथन प्रचलित है – "पाहुना हो तो मिथिला का।"

संदर्भ-सूची

1. टीकाकार-हनुमानप्रसाद पोद्दार, श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर (उ. प्र.), सटीक, मझला साइज, एक सौ आठवाँ पुनर्मुद्रण, संवत 2072, पृष्ठ संरूया-2
2. वही, पृष्ठ संख्या-163
3. वही, पृष्ठ संख्या-164
4. स्रोत-श्रीमती गिरिजा देवी, निपुत्री राजा की कथा, पता-ग्राम व पोस्ट-मकराँव, जिला-हमीरपुर (उ.प्र.), संग्रह-दिनांक – 6/7/2009
5. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-167
6. डॉ. शान्ति जैन, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1992 ई., पृष्ठ संख्या – 49-50
7. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-167
8. गायिका-श्रीमती गिरिजा देवी, संग्रह दिनांक-16/04/2008
9. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-167
10. वही, पृष्ठ संख्या-169
11. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृष्ठ संख्या-68
12. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या- 243
13. गायिका-श्रीमती रागिनी देवी, पता-ग्राम व पोस्ट-मकरबई, जिला-महोबा (उ.प्र.), संग्रह दिनांक-5/6/1999
14. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-249
15. वही, पृष्ठ संख्या-249
16. वही, पृष्ठ संख्या-253
17. गायिका-श्रीमती रेखा देवी, पता-ग्राम-कलरा, पोस्ट-जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.), संग्रह दिनांक-22/02/2009
18. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-265
19. वही, पृष्ठ संख्या-273
20. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृष्ठ संख्या-144
21. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-274
22. वही, पृष्ठ संख्या-278
23. गायिका-चंदन तिवारी, लेखन-स्नेहलता, स्रोत-यू-ट्यूबचैनल, गूगल इंटरनेट
24. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-279
25. वही, पृष्ठ संख्या-28
26. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृष्ठ संख्या-160-161
27. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-284
28. वही, पृष्ठ संख्या-284
29. गायिका-श्रीमती लाडोकुँवर, पता-ग्राम-कलरा, पोस्ट-जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.), संग्रह दिनांक-24/05/1994
30. श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ संख्या-288

लेखक परिचय: यशवंत सिंह, प्रोफ़ेसर, हिंदी वर्ग, मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर।